Shreemad Bhagawad Geeta: श्रीमद् - भगवद् - गीता

अथ श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः॥

अर्जुन उवाच ।

ये शास्त्रविधिम् उत्सृज्य यजन्ते श्रद्धया अन्विताः ।

तेषाम् निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वम् आहो रजः तमः ॥ १७ - १ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अर्जुन	Arjuna	Arjuna	अर्जुन (ने)	अर्जुन
उवाच	Uvaacha	said	पूछा	विचारले
ये	Ye	They who	जो मनुष्य	जे (लोक)
शास्त्रविधिम्	Shaastra-vidhim	ordinance of scripture	शास्त्रविधिको	शास्त्रविधीला
उत्सृज्य	Utsrujya	setting aside / having cast away	त्यागकर	सोडून
यजन्ते	Yajante	worship	पूजन करते हैं	पूजा करतात
श्रद्धया	Shraddhayaa	with faith	श्रद्धासे	श्रद्धेने
अन्विताः	AnvitaaH	endowed	युक्त हुए	युक्त होऊन
तेषाम्	TeShaam	their	उनकी	त्यांची
निष्ठा	NiShThaa	state / condition	स्थिति	निष्ठा
तु	Tu	Indeed	फिर	मग
का	Kaa	What	कौन सी है?	कोणती
कृष्ण	Krishna	O Krishna!	हे कृष्ण !	हे कृष्णा !
सत्त्वम्	Sattvam	Sattva	सात्त्विकी	सात्त्विक
आहो	Aaho	or	अथवा	की
रजः	RajaH	Rajas	राजसी	राजस
तमः	TamaH	Tamas	(किंवा) तामसी ?	तामस

अन्वय :- अर्जुन उवाच । हे कृष्ण ! ये शास्त्रविधिम् उत्सृज्य , श्रद्धया - अन्विताः (सन्तः) यजन्ते , तेषाम् तु का निष्ठा ? सत्त्वम् , रजः आहो तमः ? ॥ १७ - १ ॥

English translation:-

Arjuna asked, "O Krishna! What is the nature of the devotion of those, who though disregarding the ordinances of the Scriptures, worship (perform sacrifice) with abiding faith? Is it one of Sattva, Rajas or Tamas?"

हिन्दी अनुवाद :-

अर्जुन ने पूछा , " हे कृष्ण ! जो मनुष्य शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से युक्त हुए देवादिका पूजन करते हैं , उनकी स्थिति फिर कौन सी है ? सात्त्विकी है अथवा राजसी किंवा तामसी ? "

मराठी भाषान्तर :-

अर्जुनाने विचारले , " हे कृष्णा ! जे लोक शास्त्रविधीला सोडून , पण श्रद्धापूर्वक देवादिकांची पूजा करतात ; त्यांची निष्ठा मग कोणती ? सात्त्विक , राजस की तामस ?

विनोबांची गीताई :-

ज़े शास्त्र - मार्ग सोडूनि श्रद्धा - पूर्वक पूजिती
त्यांची सात्त्विक ती निष्ठा किंवा राजस तामस ॥ १७ - १ ॥

श्री भगवान् उवाच।

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनाम् सा स्वभावजा ।

सात्त्विकी राजसी च एव तामसी च इति ताम् श्रृणु ॥ १७ - २ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्री भगवान्	Shree Bhagavan	The Blessed Lord	श्री भगवान् ने	श्री भगवान
उवाच	Uvaacha	said	कहा	म्हणाले
त्रिविधा	Trividhaa	threefold	तीनों प्रकार की	तीन प्रकारची
भवति	Bhavati	is	होती है	असते
श्रद्धा	Shraddhaa	faith	श्रद्धा	श्रद्धा
देहिनाम्	Dehinaam	of embodied	मनुष्यों की	प्राणिमात्रांची
सा	Saa	which	वह	जी
स्वभावजा	Svabhaavajaa	born of own/ inherent nature	स्वभाव से उत्पन्न	स्वभावतः
सात्त्विकी	Saattvikee	Saattvika	सात्विकी	सात्विक
राजसी	Raajasee	Raajasee	राजसी	राजस
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	तथा	च
तामसी	Taamasee	Taamasee	तामसी	तामस
च	Cha	and	और	आणि
इति	Iti	thus	ऐसे	अशा
ताम्	Taam	it	उस को	तिचे (वर्णन 0
श्रृणु	ShruNu	You hear	तुम मुझ से सुनो	तू ऐक

अन्वय :- श्री भगवान् उवाच - देहिनाम् (या) स्वभावजा श्रद्धा सा सात्त्विकी च राजसी च तामसी च एव इति त्रिविधा भवति , ताम् शृणु ॥ १७ - २ ॥

English translation:-

The blessed Lord replied, “Threefold is the faith, born of individual nature of the embodied: Saattvika, Raajasika and Taamasika; listen to it thus.”

हिन्दी अनुवाद :-

श्री भगवान् ने कहा , “ मनुष्यों की वह शास्त्रीय संस्कारों से रहित , केवल स्वभाव से उत्पन्न श्रद्धा , सात्त्विकी और राजसी तथा तामसी ऐसे तीनों प्रकार की ही होती है । उसको तुम मुझ से सुनो ।“

मराठी भाषान्तर :-

श्रीभगवान म्हणाले , “ प्राणिमात्रांची (पूर्व संचितानुसार) स्वभावतः जी श्रद्धा असते ; ती सात्त्विक , राजस आणि तामस अशा तीन प्रकारचीच असते . त्याचे वर्णन तू आता ऐक . “

विनोबांची गीताई :-

तिन्ही प्रकारची श्रद्धा स्वभावें जीव मेळवी
ऐक सात्त्विक ती होय तशी राजस तामस ॥ १७ - २ ॥

सत्त्व अनुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत ।

श्रद्धामयः अयम् पुरुषः यः यत् श्रद्धः सः एव सः ॥ १७ - ३ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सत्त्व	Sattva	One’s nature	उन के अन्तःकरण के	आपली स्वभावप्रकृती
अनुरूपा	Anuruupaa	in accordance with	अनुरूप	अनुसार
सर्वस्य	Sarvasya	of all	सभी मनुष्यों की	सर्व लोकांची
श्रद्धा	Shraddhaa	faith	श्रद्धा	श्रद्धा
भवति	bhavati	is	होती है	असते
भारत	Bhaarata	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
श्रद्धामयः	Bhaarata	consists of faith	श्रद्धामय है	श्रद्धावान
अयम्	Ayam	this	यह	हा (मुळात)
पुरुषः	PuruShaH	man	पुरुष	मनुष्य
यः	YaH	he who	जो पुरुष	ज्याची
यत्	Tat	that is	जैसी	जशी
श्रद्धः	ShraddhaH	his faith	श्रद्धावाला है	श्रद्धा
सः	SaH	he	वह	तो
एव	Eva	verily	स्वयम् भी	तसाच
सः	SaH	he is	वही है	तो असतो (घडत जातो)

अन्वय :- हे भारत ! सर्वस्य सत्त्व - अनुरूपा श्रद्धा भवति , अयम् पुरुषः श्रद्धामयः (अस्ति) , यः यत् - श्रद्धः , सः एव सः (जीव) ॥ १७ - ३ ॥

English translation:-

O Arjuna! The faith of everyone is in accordance with one’s inherent nature. A man is made up of this abiding, enduring faith. He is verily what his faith is.

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! सभी मनुष्यों की श्रद्धा उन के अन्तःकरण के अनुरूप होती है। यह पुरुष श्रद्धामय है। इसलिये जो पुरुष जैसी श्रद्धावाला है , वह स्वयम् भी वही है।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! सर्व लोकांची श्रद्धा , आपापल्या सत्त्वाप्रमाणे म्हणजेच स्वभावप्रकृतिनुसार असते . मनुष्य हा (मुळात) श्रद्धावान आहे . जशी ज्याची श्रद्धा , तसाच तो असतो (घडत जातो) .

विनोबांची गीताई :-

ज़सा स्वभाव तो ज्याचा श्रद्धा त्याची तशी असे
श्रद्धेचा घडिला जीव ज़शी श्रद्धा तसा चि तो ॥ १७ - ३ ॥

यजन्ते सात्त्विकाः देवान् यक्ष - रक्षांसि राजसाः ।

प्रेतान् भूतगणान् च अन्ये यजन्ते तामसाः जनाः ॥ १७ - ४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यजन्ते	Yajante	worship	पूजते हैं	पूजा करतात
सात्त्विकाः	SaattvikaaH	Saattvika	सात्त्विक पुरुष	सात्त्विक पुरुष
देवान्	Devaan	gods	देवोंको	देवांची
यक्षरक्षांसि	Yaksha-RakshaaMsi	demi-gods and demons	यक्ष और राक्षसोंको	यक्ष व राक्षसांची
राजसाः	RaajasaaH	Rajasika	राजस पुरुष	राजस पुरुष
प्रेतान्	Pretaan	ghosts	प्रेत	प्रेते
भूतगणान्	Bhuuta-GaNaan	host of spirits	भूतगणोंको	भूतगणांची
च	Cha	and	और	आणि
अन्ये	Anye	others	तथा अन्य जो	इतर
यजन्ते	Yajante	worship	वे पूजते हैं	पूजा करतात
तामसाः	TaamasaaH	Taamasika	तामस	तामस
जनाः	JanaaH	people	मनुष्य हैं	पुरुष

अन्वय :- सात्त्विकाः देवान् यजन्ते । राजसाः यक्ष - रक्षांसि (यजन्ते) । अन्ये तामसाः जनाः प्रेतान् भूतगणान् च यजन्ते ॥ १७ - ४ ॥

English translation:-

The Satvikas worship the gods; Rajasikas worship the demi-gods and demons; the others i.e. Tamasikas worship the ghosts and host of spirits.

हिन्दी अनुवाद :-

सात्त्विक पुरुष देवों को पूजते हैं। राजस पुरुष यक्ष और राक्षसों को तथा अन्य जो तामस मनुष्य हैं; वे प्रेत और भूतगणों को पूजते हैं।

मराठी भाषान्तर :- सात्त्विक पुरुष देवांची पूजा करतात. राजस पुरुष यक्ष व राक्षसांची पूजा करतात आणि इतर तामस पुरुष प्रेत व भूतगणांची पूजा करतात.

विनोबांची गीताई :-

सत्त्व - स्थ पूजिती देव यक्ष - राक्षस राजस
प्रेतें आणि भुतें - खेतें पूजिती लोक तामस ॥ १७ - ४ ॥

अशास्त्र - विहितम् घोरम् तप्यन्ते ये तपः जनाः ।

दम्भ - अहङ्कार - सम् - युक्ताः काम - बल - राग - अन्विताः ॥ १७ - ५ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अशास्त्र - विहितम्	Ashaastra - Vihitam	not enjoined by scripture	शास्त्रविधि से रहित केवल मनःकल्पित	शास्त्राविरुद्ध
घोरम्	Ghoram	terrible	घोर	भयंकर
तप्यन्ते	Tapyante	practise	तपते हैं	तप करतात
ये	Ye	they who	जो	जे
तपः	TapaH	austerity	तप को	तप
जनाः	JanaaH	people	मनुष्य	लोक
दम्भ	Dambha	hypocrisy	दम्भ और	दंभ
अहङ्कार	Ahamkaara	egoism	अहंकार से	अहंकार
सम् - युक्ताः	Sam-Yuktaa	with much	युक्त	युक्त होऊन
काम	Kaama	lust	कामना	कामवासना
राग	Raaga	attachment	आसक्ति	आसक्ती
बल - अन्विताः	Bala - AnvitaaH	by the force / power of	और बल के अभिमान से भी युक्त	बलाने प्रेरित होऊन

अन्वय :- दम्भ - अहङ्कार - सम् - युक्ताः , काम - बल - राग - अन्विताः ये जनाः अशास्त्र - विहितम् घोरम् तपः तप्यन्ते ॥ १७ - ५ ॥

English translation:-

Those people who practise terrible austerities not enjoined by the scriptures, given to hypocrisy and egoism, impelled by the force of lust and attachment ....

हिन्दी अनुवाद :-

जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मनःकल्पित घोर तप को तपते हैं तथा दम्भ और अहंकार से युक्त एवं कामना , आसक्ति और बल के अभिमान से भी युक्त हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

जे लोक दंभ आणि अहंकार यांनी युक्त होऊन कामवासनेच्या आणि उपभोगाच्या आसक्तीने प्रेरित होऊन , शास्त्राविरुद्ध महाघोर तप करतात .

विनोबांची गीताई :-

शास्त्रें निषेधिलें घोर दंभे आचरिती तप
अभिमानास पेटूनि काम - रागें बळावले ॥ १७ - ५ ॥

कर्षयन्तः शरीरस्थम् भूतग्रामम् अचेतसः ।

माम् च एव अन्तः शरीरस्थम् तान् विद्धि आसुर निश्चयान् ॥ १७ - ६ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कर्षयन्तः	KarShayantaH	torturing	कृश करनेवाले हैं	कष्ट देणारे
शरीरस्थम्	Shareerastham	in body	शरीररूप से स्थित	शरीरातील
भूतग्रामम्	Bhuuta-Graamam	group of elements	भूतसमुदाय को	इंद्रिय समुदायाला
अचेतसः	AchetasaH	senseless ones / fools	अज्ञानियों को	अविवेकी लोक
माम्	Maam	Me	मुझ परमात्मा को	मला (ईश्वराला)
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	even	भी	ही
अन्तः शरीरस्थम्	AntaH - Shareerastham	Within embodied	अन्तःकरण में स्थित	शरीरातील जो मी आत्मा म्हणून आहे त्याला
तान्	Taan	them	उन	त्यांना
विद्धि	Viddhi	know / recognise	तुम जानो	तू जाण
आसुर	Aasura	of demonic	आसुर / राक्षसी	आसुरी
निश्चयान्	Nishchayaan	resolve	स्वभाववाले	वृत्तीचे

अन्वय :- अचेतसः च (ये) शरीरस्थम् भूतग्रामम् अन्तः शरीरस्थम् माम् च कर्षयन्तः , तान् एव आसुर - निश्चयान् विद्धि ॥ १७ - ६ ॥

English translation:-

Senseless fools that they are, they torture their bodily organs and even Me, embodied within, know them to be of demonic resolves.

हिन्दी अनुवाद :-

जो शरीररूप से स्थित भूतसमुदाय को और अन्तःकरण में स्थित मुझ परमात्मा को भी कृश करनेवाले हैं तथा कष्ट प्रदान करनेवाले हैं ; उन अज्ञानियों को तुम आसुर स्वभाववाले जानो ।

मराठी भाषान्तर :-

जे अविवेकी लोक , शरीरातील इंद्रिय समुदायाला आणि मज ईश्वराला म्हणजेच शरीरातील जो मी आत्मा म्हणून आहे , त्यालाही कष्ट देतात ; त्यांना तू आसुरी वृत्तीचे जाण .

विनोबांची गीताई :-

देह - धातूंस शोषूनि मज़ आत्म्यास पीडिती
विवेक - हीन ज़े त्यांची निष्ठा ती ज़ाण आसुरी ॥ १७ - ६ ॥

आहारः तु अपि सर्वस्य त्रिविधः भवति प्रियः ।

यज्ञः तपः तथा दानम् तेषाम् भेदम् इमम् श्रृणु ॥ १७ - ७ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आहारः	AahaaraH	food	भोजन	आहार
तु	Tu	indeed / verily	और	आणि
अपि	Api	also	भी	ही
सर्वस्य	Sarvasya	of all	सब को अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार	सर्वांच्या
त्रिविधः	TrividhaH	threefold	तीन प्रकार का	तीन प्रकारचा
भवति	Bhavati	is	होता है	असतो
प्रियः	PriyaH	dear	प्रिय	आवडीचा
यज्ञः	YadnyaH	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
तथा	Tathaa	also	वैसे ही	तसेच
दानम्	Daanam	gift / alms giving	दान भी तीन तीन प्रकार के होते हैं	दान
तेषाम्	TeShaam	their	उनके	त्यांच्यातील
भेदम्	Bhedam	distinction	अलग अलग	वेगळेपणा
इमम्	Imam	this	इस	हा
श्रृणु	ShruNu	You hear	तुम मुझ से सुनो	तू ऐक

अन्वय :- सर्वस्य प्रियः आहारः अपि तु त्रिविधः भवति , तथा यज्ञः , तपः , दानम् (च सर्वस्य त्रिविधम् भवति त्वम्) तेषाम् इमम् भेदम् श्रृणु ॥ १७ - ७ ॥

English translation:-

Verily, the food dear to all is also threefold, so as sacrifice, austerity and gift. Do hear this, their distinction.

हिन्दी अनुवाद :-

भोजन भी सब को अपनी - अपनी प्रकृति के अनुसार तीन प्रकार का प्रिय होता है । और वैसे ही यज्ञ तप और दान भी तीन - तीन प्रकार के होते हैं । उन के इस अलग - अलग भेद को तुम मुझ से सुनो ।

मराठी भाषान्तर :-

सर्वांच्या आवडीचा आहारही तीन प्रकारचा असतो . तसेच यज्ञ , तप आणि दानही तीन - तीन प्रकारचे असतात . त्यांच्यातील हा वेगळेपणा तू ऐक .

विनोबांची गीताई :-

आहारांत हि सर्वांच्या तीन भेद यथा - रुचि
तसें यज्ञीं तपीं दानीं सांगतों भेद ऐक ते ॥ १७ - ७ ॥

आयुः सत्त्व - बल - आरोग्य - सुख - प्रीति - विवर्धनाः ।

रस्याः स्निग्धाः स्थिराः हृद्याः आहाराः सात्त्विकप्रियाः ॥ १७ - ८ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
आयुः	AayuH	life / longevity	आयु	आयुष्य
सत्त्व	Sattva	purity	सत्व	मानसिक बळ
बल	Bala	strength	बल	शारीरिक बळ
आरोग्य	Aarogya	health	आरोग्य	आरोग्य
सुख	Sukha	joy	सुख	सुख
प्रीति	Preeti	cheerfulness and good appetite	प्रीति	प्रीती
विवर्धनाः	VivardhanaaH	those which increase	बढानेवाले	वाढविणारे
रस्याः	RasyaaH	savoury	रसयुक्त	रसयुक्त
स्निग्धाः	SnigdhaaH	oleaginous	चिकने	स्निग्ध
स्थिराः	SthiraaH	substantial	और स्थिर रहनेवाले	पौष्टिक
हृद्याः	HrudyaaH	agreeable	स्वभाव से हि मन को प्रिय ऐसे	मनाला आनंद देणारे
आहाराः	AahaaraaH	the foods	आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ	आहार
सात्त्विक-प्रियाः	Saattvika-PriyaaH	Are dear to the Saattvika	सात्त्विक पुरुष को प्रिय होते हैं	सात्त्विक पुरुषाला प्रिय असतात

अन्वय :- आयुः - सत्त्व - बल - आरोग्य - सुख - प्रीति – विवर्धनाः , रस्याः , स्निग्धाः , स्थिराः , हृद्याः , आहाराः सात्त्विकप्रियाः (सन्ति) ॥ १७ - ८ ॥

English translation:-

The food that increases vitality, energy, purity, vigour, health, joy and cheerfulness, which are savoury and oleaginous, substantial and agreeable are dear to the Saattvika.

हिन्दी अनुवाद :-

आयु , बुद्धि , बल , आरोग्य , सुख और प्रीति को बढानेवाले , रसयुक्त , चिकने और स्थिर रहनेवाले तथा स्वभाव से हि मन को प्रिय - ऐसे आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ सात्विक पुरुष को प्रिय होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

आयुष्य , मानसिक बळ , शारीरिक बळ , आरोग्य , सुख व प्रीती वाढविणारे ; रसयुक्त , स्निग्ध , पौष्टिक (शरीरात परिणाम रूपाने चिरकाल राहणारे) , मनाला आनंद देणारे आहार , सात्त्विक पुरुषाला प्रिय असतात .

विनोबांची गीताई :-

सत्त्व प्रीति सुख स्वास्थ्य आयुष्य बळ वाढवी
रसाळ मधुर स्निग्ध स्थिर आहार सात्त्विक ॥ १७ - ८ ॥

कटुः अम्लः लवणः अत्युष्णः तीक्ष्णः रूक्षः विदाहिनः ।

आहाराः राजसस्य इष्टाः दुःख - शोकः - आमयः - प्रदाः ॥ १७ - ९ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
कटुः	KatuH	bitter	कडवे	कडवट
अम्लः	AmlaH	sour	खट्टे	आंबट
लवणः	LavaNaH	salty	नमकीन	खारट
अत्युष्णः	AtyuShNaH	very hot	बहुत गरम	अति - उष्ण
तीक्ष्णः	TiikshNaH	pungent	तीखे	झणझणीत / तिखट
रूक्षः	RuukshaH	dry	रूखे	कोरडे
विदाहिनः	VidaahinaH	burning	दाहकारक	जळजळीत
आहाराः	AahaaraaH	foods	आहार अर्थात् भोजन करने के पदार्थ	आहार
राजसस्य	Raajasasya	of the Raajasika	राजस पुरुष को	राजस पुरुषाला
इष्टाः	IShTaaH	are relished	प्रिय होते हैं	प्रिय असतात
दुःख	DukhaH	pain	दुःख	दुःख
शोकः	ShokaH	grief	चिन्ता	काळजी
आमयः	AamayaH	disease	तथा रोगों को	रोग
प्रदाः	PradaaH	producing	उत्पन्न करनेवाले	वाढविणारे

अन्वय :- कटुः - अम्लः - लवणः - अत्युष्णः - तीक्ष्णः - रूक्षः - विदाहिनः , दुःख - शोकः - आमयः - प्रदाः आहाराः राजसस्य इष्टाः (भवन्ति) ॥ १७ - ९ ॥

English translation:-

Foods bitter, sour, salty, very hot, pungent, dry and burning, which produce pain, grief and disease, are relished by the Raajasika.

हिन्दी अनुवाद :-

कडवे , खट्टे , नमकीन , बहुत गरम , तीखे , रूखे , दाहकारक और दुःख चिन्ता तथा रोगों को उत्पन्न करनेवाले आहार अर्थात् भोजन ; राजस पुरुष को प्रिय होते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

कडवट , आंबट , खारट , अति - उष्ण , झणझणीत तिखट , कोरडे , जळजळीत ; तसेच दुःख , काळजी आणि रोग वाढविणारे आहार , राजस पुरुषाला प्रिय असतात .

विनोबांची गीताई :-

खारे रुक्ष कडू तीख अम्ल अत्युष्ण दाहक
दुःख - शोक - द आहार रोग वर्धक राजस ॥ १७ - ९ ॥

यातयामम् गतरसम् पूति पर्युषितम् च यत् ।

उच्छिष्टम् अपि च अमेध्यम् भोजनम् तामसप्रियम् ॥ १७ - १० ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यातयामम्	Yaatayaamam	stale	अध-पका	बऱ्याच वेळापूर्वी शिजविल्याने थंड झालेले / प्रहर उलटलेले
गतरसम्	Gatarasam	tasteless	रसरहित	नीरस
पूति	Pooti	putrid	दुर्गन्धयुक्त	विटलेले
पर्युषितम्	ParyuShitam	rotten	बासी	शिळे (अनेक दिवसांचे)
च	Cha	and	और	आणि
यत्	Yat	which	जो	जे
उच्छिष्टम्	UchchhiShTam	left over / polluted	उच्छिष्ट है	उष्टे
अपि	Api	also	भी है	सुद्धा
च	Cha	and	तथा जो	आणि
अमेध्यम्	Amedhyam	impure	अपवित्र	अमंगळ
भोजनम्	Bhojanam	food	भोजन	अन्न
तामसप्रियम्	Taamasa-Priyam	dear to the Taamasika	भोजन तामस पुरुष को प्रिय होता है	तामस पुरुषाला प्रिय असते

अन्वय :- यत् यातयामम् , गतरसम् , पूति , पर्युषितम् च उच्छिष्टम् अपि च अमेध्यम् भोजनम् (तत्) तामसप्रियम् (अस्ति) ॥ १७ - १० ॥

English translation:-

Food which is stale, tasteless, putrid, rotten left over, polluted and impure is dear to the Taamasika.

हिन्दी अनुवाद :-

जो भोजन अध-पका , रसरहित , दुर्गन्धयुक्त , बासी और उच्छिष्ट है तथा जो अपवित्र भी है , वह भोजन तामस पुरुष को प्रिय होता है ।

मराठी भाषान्तर :-

बऱ्याच वेळापूर्वी शिजविल्याने थंड झालेले , नीरस , विटलेले , शिळे (अनेक दिवसांचे) , उष्टे आणि अमंगळ अन्न तामस पुरुषाला प्रिय असते .

विनोबांची गीताई :-

रस - हीन निवालेलें शिळें दुर्गंध - युक्त जें
निषिद्ध आणि उष्टें हि तामस - प्रिय भोजन ॥ १७ - १० ॥

अफल आकाङ्क्षिभिः यज्ञः विधिदृष्टः यः इज्यते ।

यष्टव्यम् एव इति मनः समाधाय सः सात्त्विकः ॥ १७ - ११ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अफल - आकाङ्क्षिभिः	Aphala - AakaankshibhiH	by those desiring no fruit	फल न चाहनेवाले पुरुषोंद्वारा	फळाची अपेक्षा सोडलेल्या पुरुषांकडून
यज्ञः	YadnyaH	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
विधिदृष्टः	VidhidruShTaH	as enjoined by ordinance	शास्त्रविधि से नियत	यथाशास्त्र
यः	YaH	which	जो	जो (यज्ञ)
इज्यते	Ijyate	is offered	किया जाता है	केला जातो
यष्टव्यम्	YShTavyam	ought to be offered	करना कर्तव्य है	कर्तव्यबुद्धीने
एव	Eva	only	ही	ह्याच
इति	Iti	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारे
मनः	ManaH	the mind	मन को	मन
समाधाय	Samaadhaaya	having fixed / focussed	समाधान कर के	शांत ठेवून
सः	SaH	that	वह	त्याला
सात्त्विकः	SaattvikaH	Saattvika	सात्त्विक है	सात्त्विक (यज्ञ म्हणतात)

अन्वय :- अफल - आकाङ्क्षिभिः (पुरुषैः) यष्टव्यम् एव इति मनः समाधाय विधिदृष्टः यः यज्ञः इज्यते , सः सात्त्विकः (यज्ञः मतः) ॥ १७ - ११ ॥

English translation:-

The sacrifice offered by those desiring no fruit, as enjoined by ordinance, with the mind well resolved that they should merely sacrifice without expecting anything in return, that is called as Saattvika Yadnya.

हिन्दी अनुवाद :-

जो शास्त्रविधि से नियत यज्ञ करना ही कर्तव्य है - इस प्रकार मन को समाधान कर के , फल न चाहनेवाले पुरुषों द्वारा किया जाता है , वह सात्त्विक यज्ञ है ।

मराठी भाषान्तर :-

फळाची अपेक्षा न करता , कर्तव्यबुद्धीने , मन शांत ठेवून , यथाशास्त्र केलेल्या यज्ञाला सात्त्विक यज्ञ म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

फलाभिलाष सोडूनि कर्तव्य चि म्हणूनियां
विधीनें मन लावूनि होय तो यज्ञ सात्विक ॥ १७ - ११ ॥

अभिसंधाय तु फलम् दम्भार्थम् अपि च एव यत् ।

इज्यते भरतश्रेष्ठ तम् यज्ञम् विद्धि राजसम् ॥ १७ - १२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अभिसंधाय	Abhi-SaMdhaaya	seeking for	दृष्टि में रखकर	मनात अपेक्षा ठेवून
तु	Tu	indeed	परन्तु	परन्तु
फलम्	Phalam	fruit	फल को	फळाची
दम्भार्थम्	Dambha-Artham	for the sake of ostentation	दम्भाचरण के लिये	दांभिकपणाने
अपि	Api	also	भी	ही
च	Cha	and	अथवा	आणि
एव	Eva	even	केवल	केवळ
यत्	Tat	that which	जो यज्ञ	जो यज्ञ
इज्यते	Ijyate	is offered	किया जाता है	केला जातो
भरतश्रेष्ठ	Bharata-ShreShTha	O Best of Bharatas	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
तम्	Tam	that	उस	तो
यज्ञम्	Yadnyam	sacrifice	यज्ञ को	यज्ञ
विद्धि	Viddhi	know	तुम जानो	तू समज
राजसम्	Raajasam	Rajasika	राजस	राजस

अन्वय :- हे भरतश्रेष्ठ ! फलम् तु अभिसंधाय , अपि च दम्भार्थम् एव यत् इज्यते , तम् यज्ञम् राजसम् विद्धि ॥ १७ - १२॥

English translation:-

O best of Bharatas, the sacrifice offered in expectation of reward (fruit) and for self - glorification, know that as Raajasika Yadnya.

हिन्दी अनुवाद :-

परन्तु हे अर्जुन ! केवल दम्भाचरण के लिये अथवा फल को भी दृष्टि में रखकर जो यज्ञ किया जाता है उस यज्ञ को तुम राजस जानो ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! मनात फळाचीही अपेक्षा ठेवून आणि केवळ दांभिकपणाने जो यज्ञ केला जातो ; तो राजस यज्ञ आहे असे तू समज .

विनोबांची गीताई :-

फळाचें अनुसंधान राखुनी दंभ - पूर्वक

लोकांत यजिला ज़ाय ज़ाण तो यज्ञ राजस ॥ १७ - १२ ॥

विधिहीनम् असृष्ट - अन्नम् मन्त्रहीनम् अदक्षिणम् ।

श्रद्धाविरहितम् यज्ञम् तामसम् परिचक्षते ॥ १७ - १३॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
विधिहीनम्	Vidhee - Heenam	contrary to ordinance	शास्त्रविधि से हीन	शास्त्रविधीला सोडून
असृष्ट - अन्नम्	AsruShTa - Annam	in which food is not distributed	अन्नदान से रहित	अन्नदान न करता
मन्त्रहीनम्	Mantra - Heenam	which is devoid of holy chanting	मन्त्रों के बिना	मंत्राशिवाय
अदक्षिणम्	A-Daksheenam	without gift	दक्षिणा के बिना	दक्षिणा न देता
श्रद्धाविरहितम्	Shraddhaa - Virahitam	which is devoid of faith	श्रद्धा के बिना	श्रद्धेवाचून
यज्ञम्	Yadnyam	sacrifice	किये जानेवाले यज्ञ को	केलेला यज्ञ
तामसम्	Taamasam	Taamasika	तामस यज्ञ	हा तामस यज्ञ
परिचक्षते	Parichakshyate	they declare	कहते हैं	म्हणतात

अन्वय :- विधिहीनम् , असृष्ट - अन्नम् , मन्त्रहीनम् , अदक्षिणम् , श्रद्धाविरहितम् (च) यज्ञम् तामसम् परिचक्षते ॥ १७ - १३॥

English translation:-

The sacrifice which is severed from ordinance, in which no food is distributed, which is devoid of Mantras, gift and all abiding faith is declared as Taamasika Yadnya.

हिन्दी अनुवाद :-

शास्त्रविधि से हीन , अन्नदान से रहित ; मन्त्रों के , दक्षिणा के और श्रद्धा के बिना किये जानेवाले यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

शास्त्रविधीला सोडून , अन्नदान न करता , मंत्राशिवाय , दक्षिणा न देता , श्रद्धेवाचून केलेला यज्ञ हा तामस यज्ञ होय .

विनोबांची गीताई :-

नसे विधि नसे मंत्र अन्नोत्पत्ति नसे जिथें
नसे श्रद्धा नसे त्याग बोलिला यज्ञ तामस ॥ १७ - १३ ॥

देव - द्विज - गुरु - प्राज्ञः पूजनम् शौचम् आर्जवम् ।

ब्रह्मचर्यम् अहिंसा च शारीरम् तपः उच्यते ॥ १७ - १४॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
देव	Deva	gods	देवता	देव
द्विज	Dvija	twice born ones / BrahmaNas	ब्राह्मण	ब्राम्हण
गुरु	Guru	teachers	गुरु और	गुरुजन
प्राज्ञः	PradnyaH	wise ones	ज्ञानीजनों का	ज्ञानी
पूजनम्	Poojanam	worship	पूजन	पूजा
शौचम्	Shaucham	purity	पवित्रता	शुद्धता
आर्जवम्	Aavarjam	uprightness / straight-forwardness	सरलता	शरीर आणि मनाचा समतोल व समन्वय
ब्रह्मचर्यम्	Brahma-charyam	celibacy	ब्रह्मचर्य और	ब्रह्मचर्य
अहिंसा	Ahimsaa	non-injury	अहिंसा	अहिंसा
च	Cha	and	और	आणि
शारीरम्	Shaariram	of the body	यह शरीर सम्बन्धी	शारीरिक म्हणजेच कायिक
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	असे म्हणतात

अन्वय :- देव - द्विज - गुरु - प्राज्ञः - पूजनम् , शौचम् , आर्जवम् , ब्रह्मचर्यम् , अहिंसा च (इति) शारीरम् तपः उच्यते ॥ १७ - १४॥

English translation:-

The worship of gods, twice born, gurus and the wise and purity, uprightness, celibacy and non-injury these are called austerity of body (Shaareerika Tapa).

हिन्दी अनुवाद :-

देवता , ब्राह्मण , गुरु और ज्ञानीजनों का पूजन , पवित्रता , सरलता , ब्रह्मचर्य और अहिंसा ; यह शरीर - सम्बन्धी तप कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

देव - ब्राम्हण - गुरुजन आणि ज्ञानी यांची पूजा , स्नानादि शुद्धता , शरीर आणि मनाचा समतोल व समन्वय , ब्रह्मचर्य आणि अहिंसा याला शारीरिक म्हणजेच कायिक तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

गुरु - देवादिकीं पूजा स्वच्छता वीर्य - संग्रह
अहिंसा ऋजुता अंगीं देहाचें तप बोलिलें ॥ १७ - १४ ॥

अनुद्वेगकरम् वाक्यम् सत्यम् प्रियहितम् च यत् ।

स्वाध्याय अभ्यसनम् च एव वाङ्मयम् तपः उच्यते ॥ १७ - १५॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अनुद्वेगकरम्	An-Udvegakaram	causing no excitement	उद्वेग न करनेवाला	कोणाच्याही मनाला न दुखविणारे
वाक्यम्	Vaakyam	speech	भाषण है	भाषण
सत्यम्	Satyam	truthful	यथार्थ	सत्य
प्रियहितम्	Priyahitam	pleasant and beneficial	प्रिय और हितकारक	प्रिय व हितकारक
च	Cha	and	एवं	आणि
यत्	Yat	that which	जो	असे
स्वाध्याय - अभ्यसनम्	Svaadhyaaya – Abhyasanam	Practice of the study of the Vedas	वेद शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम –जप का अभ्यास है	वेदांचे अध्ययन करणे
च	Cha	and	तथा	आणि
एव	Eva	also	वही	याला
वाङ्मयम्	Vaangmayam	of speech	वाणी - सम्बन्धी	वाणीचे किंवा वाचिक
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
उच्यते	Uchyate	called	कहा जाता है	असे म्हणतात

अन्वय :- यत् अनुद्वेगकरम् , सत्यम् , प्रियहितम् वाक्यम् च (यत्) स्वाध्याय - अभ्यसनम् च, (तत्) एव वाङ्मयम् तपः (इति) उच्यते ॥ १७ - १५॥

English translation:-

The speech which causes no undue excitement and is truthful, pleasant and beneficial, and also the study of Vedas – these are called as austerity of speech (Vaangmaya Tapa).

हिन्दी अनुवाद :-

जो उद्वेग न करनेवाला , प्रिय और हितकारक एवं यथार्थ भाषण है तथा जो वेद – शास्त्रों के पठन का एवं परमेश्वर के नाम - जपका अभ्यास है ---- वही वाणी - सम्बन्धी तप कहा जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

कोणाच्याही मनाला न दुखविणारे , सत्य , प्रिय व हितकारक असे भाषण आणि वेदांचे अध्ययन करणे ; याला वाणीचे किंवा वाचिक तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

हितार्थ बोलणें सत्य प्रेमानें न खुपलसें
स्वाध्याय करणें नित्य वाणीचें तप बोलिलें ॥ १७ - १५ ॥

मनःप्रसादः सौम्यत्वम् मौनम् आत्मविनिग्रहः ।

भावसंशुद्धिः इति एतत् तपः मानसम् उच्यते ॥ १७ - १६॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मनःप्रसादः	ManaH-PrasaadaH	serenity of mind	मन की प्रसन्नता	मनाची प्रसन्नता
सौम्यत्वम्	Saumyatvam	gentleness	शान्तभाव	मन शांत ठेवणे
मौनम्	Maunam	silence	भगवत् चिन्तन करने का स्वभाव	मौन धारण करणे
आत्मविनिग्रहः	Aatma-VinigrahaH	self-restraint	मन का निग्रह	मनाचा निग्रह
भावसंशुद्धिः	Bhaava-SamshuddhiH	very pure disposition	अन्तःकरण के भावों की भलीभाँति पवित्रता	अन्तःकरणाचे पावित्र्य राखणे
इति	Iti	thus	इस प्रकार	अशाप्रकारच्या
एतत्	Etat	this	यह	या
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
मानसम्	Maanasam	mental	मनसम्बन्धी	मानसिक
उच्यते	Uchyate	called	कहा जाता है	असे म्हणतात

अन्वय :- मनःप्रसादः , सौम्यत्वम् , मौनम् , आत्मविनिग्रहः , भावसंशुद्धिः इति एतत् मानसम् तपः उच्यते ॥ १७ - १६॥

English translation:-

Serenity of mind, gentleness, silence, self-restraint and very pure disposition these qualities are called austerity of mind (Maanasika Tapa).

हिन्दी अनुवाद :-

मन की प्रसन्नता , शान्तभाव , भगवत् चिन्तन करने का स्वभाव , मन का निग्रह और अन्तःकरण के भावों की भलीभाँति पवित्रता -- इस प्रकार यह मनसम्बन्धी तप कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

मनाची प्रसन्नता , मन शांत ठेवणे , मौन धारण करणे , मनाचा निग्रह आणि अन्तःकरणाचे पावित्र्य राखणे ; या सर्वांना मानसिक तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

प्रसन्न - वृत्ति सौम्यत्व आत्म - चिंतन संयम
भावना राखणें शुद्ध मनाचें तप बोलिलें ॥ १७ - १६ ॥

श्रद्धया परया तप्तम् तपः तत् त्रिविधम् नरैः ।

अफल आकाङ्क्षिभिः युक्तैः सात्त्विकम् परिचक्षते ॥ १७ - १७॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
श्रद्धया	Shraddhayaa	with faith	श्रद्धा से	श्रद्धेने
परया	Parayaa	highest	परम	अत्यंत
तप्तम्	Taptam	practised	किये हुए	आचरलेल्या
तपः	TapaH	austerity	तप को	तप
तत्	Tat	that	उस पूर्वोक्त	ते
त्रिविधम्	Trividham	threefold	तीन प्रकार के	तिन्ही प्रकारच्या
नरैः	NaraiH	by men	पुरुषों द्वारा	पुरुषांकडून
अफल	Aphala	no fruit	फल को न	फळ नाही
आकाङ्क्षिभिः	AakaankshibhiH	desiring	चाहनेवाले	अपेक्षा करणाऱ्या
युक्तैः	YuktaiH	steadfast	योगी	योगी
सात्त्विकम्	Saattvikam	Saattvikaa	सात्त्विक	सात्त्विक
परिचक्षते	Parichakshate	they declare	कहते हैं	असे म्हणतात

अन्वय :- अफल - आकाङ्क्षिभिः युक्तैः नरैः परया श्रद्धया तप्तम् (यत्) त्रिविधम् तपः , तत् सात्त्विकम् परिचक्षते ॥ १७ - १७ ॥

English translation:-

The threefold austerity, practised by devout men with utmost faith and desiring no reward is declared as Saattvika.

हिन्दी अनुवाद :-

फल को न चाहनेवाले योगी पुरुषों द्वारा , परम श्रद्धा से किये हुए , उस पूर्वोक्त तीन प्रकार के तप को , सात्त्विक कहते हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

फळाची अपेक्षा न करणाऱ्या , योगी पुरुषांकडून अत्यंत श्रद्धेने केलेल्या , पूर्वोक्त तिन्ही प्रकारच्या म्हणजेच कायिक , वाचिक आणि मानसिक तपाला ; सात्त्विक तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

तिहेरी तप तें सारें श्रद्धा उत्कट ज़ोडुनी
समत्वें फळ सोडूनि घडलें ज़ाण सात्त्विक ॥ १७ - १७ ॥

सत्कार मान पूजा अर्थम् तपः दम्भेन च एव यत् ।

क्रियते तत् इह प्रोक्तम् राजसम् चलम् अध्रुवम् ॥ १७ - १८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सत्कार	Satkaara	reverence	सत्कार	सत्कार
मान	Maana	honour	मान	मान
पूजा - अर्थम्	Poojaa - Artham	with the object of gaining worship	और पूजा के लिये	पूजेसाठी
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
दम्भेन	Dambhena	with ostentation	पाखण्ड से	दांभिकपणे
च	Cha	and	तथा	आणि
एव	Eva	also	केवल (अन्य किसी स्वार्थ के लिये भी स्वभाव से)	सुद्धा
यत्	Yat	that which	जो	जे
क्रियते	Kriyate	is done	किया जाता है	केले जाते
तत्	Tat	that	वह	ते
इह	Iha	here	यहाँ	येथे
प्रोक्तम्	Proktam	is said	कहा गया है	असे म्हणतात
राजसम्	Raajasam	Rajasika	राजस	राजस
चलम्	Chalam	unstable	क्षणिक फलवाला तप	चंचल
अध्रुवम्	Adhruvam	transitory	अनिश्चित	अस्थिर

अन्वय :- सत्कार - मान - पूजा - अर्थम् दम्भेन च एव यत् तपः क्रियते , तत् इह राजसम् चलम् अध्रुवम् प्रोक्तम् ॥ १७ - १८॥

English translation:-

The austerity which is practised with the object of gaining reverence, honour and worship and with ostentation is said here in this world, to be “Raajasika Tapa”, that is unstable and transitory.

हिन्दी अनुवाद :-

जो तप सत्कार , मान और पूजा के लिये तथा अन्य किसी स्वार्थ के लिये भी स्वभाव से या पाखण्ड से किया जाता है , वह अनिश्चित एवं क्षणिक फलवाला तप यहाँ राजस कहा गया है।

मराठी भाषान्तर :-

जे तप आपल्या सत्कार , मान व पूजेसाठी दांभिकपणे केले जाते , त्या अस्थिर आणि चंचल तपाला , राजस तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

सत्कारादिक इच्छूनि केलें जें दंभ राखुनी
तें चंचळ इथें ज़ाण तप राजस अस्थिर ॥ १७ - १८ ॥

मूढग्राहेण आत्मनः यत् पीडया क्रियते तपः ।

परस्य उत्सादन अर्थम् वा तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १७ - १९॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
मूढग्राहेण	MuuDha-Graahena	out of a foolish notion	मूढतापूर्वक हठ से	मूर्खपणाने , अट्टाहासाने
आत्मनः	AatmanaH	of self	अपने (मन वाणी और शरीर की)	स्वतःला (मन वाणी आणि शरीराला)
यत्	Yat	that which	जो	जे
पीडया	Peedayaa	with torture	पीडा के सहित	त्रास देऊन
क्रियते	Kriyate	is done	किया जाता है	केले जाते
तपः	TapaH	austerity	तप	तप
परस्य	Parasya	of another	दूसरे का	दुसऱ्यांचे
उत्सादन	Utsaadana	destruction	अनिष्ट	अहित
अर्थम्	Artham	for the purpose of	करने के लिये	करण्यासाठी
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
तत्	Tat	that	वह तप	त्याला
तामसम्	Taamasam	Taamasika	तामस	तामस तप
उदाहृतम्	Udaahrutam	is declared	कहा गया है	असे म्हणतात

अन्वय :- मूढग्राहेण आत्मनः पीडया परस्य उत्सादन - अर्थम् वा यत् तपः क्रियते , तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १७ - १९ ॥

English translation:-

The austerity practised with foolish notion, torturing oneself or aiming to destroy another is declared as "Taamasika Tapa".

हिन्दी अनुवाद :-

जो तप मूढतापूर्वक हठ से , मन , वाणी और शरीर की पीडा के सहित अथवा दूसरे का अनिष्ट करने के लिये किया जाता है -- वह तप तामस कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

जे तप मूर्खपणाने , अट्टाहासाने , स्वतःला म्हणजेच मन , वाणी आणि शरीराला त्रास देऊन , दुसऱ्यांचे अहित करण्यासाठी केले जाते ; त्याला तामस तप असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

दुराग्रहें चि जें होय अंतरात्म्यास पीडुनी
किंवा जें पर - घातार्थ ज्ञाण तामस तें तप ॥ १७ - १९ ॥

दातव्यम् इति यत् दानम् दीयते अनुपकारिणे ।

देशे काले च पात्रे च तत् दानम् सात्त्विकम् स्मृतम् ॥ १७ - २०॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
दातव्यम्	Daatavyam	ought to be given	दान देना ही कर्तव्य है	कर्तव्य भावनेने दान करणे
इति	Iti	thus	ऐसे भाव से	असे
यत्	Yat	that which	जो	जे
दानम्	Daanam	gift	दान	दान
दीयते	Deeyate	is given	दिया जाता है	दिले जाते
अनुपकारिणे	An-UpakaariNe	to one who does no service in return	उपकार न करनेवाले के प्रति	(आपल्या दानाच्या) परतफेडीची अपेक्षा न बाळगता
देशे	Deshe	in place	देश	योग्य स्थळी
काले	Kaale	in time	तथा काल	योग्य काळी
च	Cha	and	और	आणि
पात्रे	Paatre	to recipient	पात्र के प्राप्त होनेपर	योग्य पुरुषाला
च	Cha	and	और	आणि
तत्	Tat	that	वह	त्या
दानम्	Daanam	gift	दान	दानाला
सात्त्विकम्	Saattvikam	Saattvika	सात्त्विक	सात्त्विक
स्मृतम्	Smrutam	is considered	कहा गया है	असे म्हणतात

अन्वय :- दातव्यम् इति यत् दानम् देशे च काले च पात्रे (च) अनुपकारिणे दीयते , तत् दानम् सात्त्विकम् स्मृतम् ॥ १७ - २० ॥

English translation:-

The gift which is given to one who does no service in return, with the feeling that it is one's duty to give and which is given at the right place, in right time and to a worthy person is considered as "Saattvika Daana".

हिन्दी अनुवाद :-

दान देना यह योग्य कर्तव्य है -- इस भाव से जो दान , देश तथा काल और पात्र के प्राप्त होनेपर , उपकार न करनेवाले के प्रति दिया जाता है ; वह दान सात्त्विक कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

दान करणे हेच योग्य कर्तव्य आहे असे मानून , आपल्या दानाच्या परतफेडीची अपेक्षा न बाळगता , योग्य पुरुषाला , योग्य स्थळी आणि योग्य काळी दिले जाते ; त्याला सात्त्विक दान असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

देशीं काळीं तसें पात्रीं उपकार न इच्छितां
धर्म - भावें चि जें देणें ज्ञाण तें दान सात्त्विक ॥ १७ - २० ॥

यत् तु प्रति - उपकार - अर्थम् फलम् उद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टम् तत् दानम् राजसम् स्मृतम् ॥ १७ - २१॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यत्	Yat	that which	जो दान	जे (दान)
तु	Tu	indeed	किन्तु	परंतु
प्रति - उपकार - अर्थम्	Prati-Upakaara-Artham	with a view to receive in return	प्रत्युपकार के प्रयोजन से	परतफेडीच्या अपेक्षेने
फलम्	Phalam	fruit	फल को	फळाची
उद्दिश्य	Uddishya	having expected	दृष्टि में रखकर	इच्छा ठेवून
वा	Vaa	or	अथवा	अथवा
पुनः	PunaH	again	फिर	परत
दीयते	Deeyate	is given	दिया जाता है	दिले जाते
च	Cha	and	तथा	आणि
परिक्लिष्टम्	Pari-KliShTam	reluctantly	क्लेशपूर्वक	मोठ्या कष्टाने
तत्	Tat	that	वह	ते
दानम्	Daanam	gift	दान	दान
राजसम्	Raajasam	Raajasika	राजस	राजस
स्मृतम्	Smrutam	is considered	कहा गया है	असे म्हणतात

अन्वय :- यत् तु प्रत्युपकारार्थम् , फलम् उद्दिश्य वा , पुनः परिक्लिष्टम् च दीयते , तत् दानम् राजसम् स्मृतम् ॥ १७ - २१ ॥

English translation:-

The gift which is given only to receive something in return or expecting a reward, again reluctantly, is considered as "Raajasika Daana".

हिन्दी अनुवाद :-

किन्तु जो दान क्लेशपूर्वक तथा प्रत्युपकार के प्रयोजन से अथवा फल को दृष्टि में रखकर फिर दिया जाता है , वह दान राजस कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

परंतु , जे दान परतफेडीच्या अपेक्षेने किंवा फळाची इच्छा ठेवून , मोठ्या कष्टाने दिले जाते ; त्याला राजस दान असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

उपकार अपेक्षूनि अथवा फळ वांछुनी
क्लेश - पूर्वक जें देणें ज़ाण तें दान राजस ॥ १७ - २१ ॥

अदेशेकाले यत् दानम् अपात्रेभ्यः च दीयते ।

असत्कृतम् अवज्ञातम् तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १७ - २२॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अदेशेकाले	Adeshekaale	at a wrong place and time	अयोग्य देश – काल में	अयोग्य ठिकाणी, अयोग्य वेळी
यत्	Yat	that which	जो	जे
दानम्	Daanam	gift	दान	दान
अपात्रेभ्यः	ApaatrebhyaH	to unworthy recipients	कुपात्र के प्रति	अयोग्य व्यक्तीला
च	Cha	and	और	आणि
दीयते	Deeyate	is given	दिया जाता है	दिले जाते
असत्कृतम्	Astkrutam	without respect	बिना सत्कार के	सत्कार न करता
अवज्ञातम्	Avadnyaatam	with insult	तिरस्कारपूर्वक	अपमानपूर्वक
तत्	Tat	that	वह दान	त्याला
तामसम्	Taamasam	Taamasika	तामस	तामस
उदाहृतम्	Udaahrutam	is declared	कहा गया है	असे म्हणतात

अन्वय :- यत् दानम् असत्कृतम् अवज्ञातम् , अदेशेकाले अपात्रेभ्यः च दीयते , तत् तामसम् उदाहृतम् ॥ १७ - २२॥

English translation:-

The gift that is given at a wrong place and time, to unworthy recipients, without respect or with insult, is declared to be "Taamasika Daana".

हिन्दी अनुवाद :-

जो दान बिना सत्कार के अथवा तिरस्कार पूर्वक अयोग्य देश - काल में और कुपात्र के प्रति दिया जाता है , वह दान तामस कहा गया है ।

मराठी भाषान्तर :-

जे दान , सत्कार न करता आणि अपमानपूर्वक , अयोग्य ठिकाणी , अयोग्य वेळी आणि अयोग्य व्यक्तीला दिले जाते ; त्याला तामस दान असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

करूनि भावना तुच्छ देशादिक न पाहतां
अनादरें चि ज़ें देणें ज़ाण तें दान तामस ॥ १७ - २२ ॥

ॐ तत् सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविधः स्मृतः ।

ब्राह्मणाः तेन वेदाः च यज्ञाः च विहिताः पुरा ॥ १७ - २३॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
ॐ	AUM	Om (The divine monosyllable)	"ॐ"	"ॐ"
तत्	Tat	that is	तत्	तत्
सत्	Sat	real	सत्	सत्
इति	Iti	thus	ऐसे	असे
निर्देशः	NirdeshaH	designation	नाम	उल्लेख
ब्रह्मणः	BrahmaNaH	of Brahman	सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का	सच्चिदानंदघन ब्रह्माचा
त्रिविधः	TrividhaH	threefold	तीन प्रकार का	तीन प्रकारचे
स्मृतः	SmrutaH	has been considered	कहा है	आहे
ब्राह्मणाः	BraahmaNaaH	Brahmanas	ब्राह्मण	ब्राह्मण
तेन	Tena	by that	उसी से	त्याच्याकडून
वेदाः	VedaaH	Vedas	वेद	वेद इत्यादी
च	Cha	and	और	आणि
यज्ञाः	YadnyaaH	sacrifices	तथा यज्ञादि	यज्ञ
च	Cha	and	और	आणि
विहिताः	VihitaaH	created	रचे गये	निर्मिले गेले
पुरा	Puraa	ancient	सृष्टि के आदिकाल में	सृष्टीच्या आदिकाळी

अन्वय :- ॐ तत् सत् इति ब्रह्मणः त्रिविधः निर्देशः स्मृतः तेन ब्राह्मणाः वेदाः च यज्ञाः च पुरा विहिताः ॥ १७ - २३ ॥

English translation:-

"Om Tat Sat" has been considered as the threefold designation of that all pervading Brahman, from which arose Brahmanas, Vedas and sacrifices of yore.

हिन्दी अनुवाद :-

ॐ , तत् और सत् ऐसे यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्दघन ब्रह्म का नामस्मरण कहा गया है। उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादि रचे गये थे।

मराठी भाषान्तर :-

ॐ , तत् , सत् असा ब्रह्माचा तीन प्रकारे नामोच्चार केला जातो . या ब्रह्मापासून पूर्वकाळी म्हणजेच सृष्टीच्या आरंभी ; ब्राह्मण , वेद आणि यज्ञ निर्माण झाले आहेत .

विनोबांची गीताई :-

ॐ - तत् - सत् ह्यापरी ब्रह्म तिहेरी स्मरलें असे
त्यांतूनि निर्मिले पूर्वी वेद यज्ञ उपासक ॥ १७ - २३ ॥

तस्मात् ॐ इति उदाहृत्य यज्ञ - दान - तपः - क्रियाः ।

प्रवर्तन्ते विधान उक्ताः सततम् ब्रह्मवादिनाम् ॥ १७ - २४ ॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तस्मात्	Tasmaat	therefore	इसलिये	म्हणून
ॐ	AUM	Om (The divine monosyllable)	"ॐ"	"ॐ"
इति	Iti	thus	इस परमात्मा के नाम को	असे (या परमात्म्याच्या नामाचे)
उदाहृत्य	Udaahrutya	having uttered	उच्चारण कर के ही	उच्चारण करूनच
यज्ञ	Yadnya	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
दान	Daana	gift	दान	दान
तपः	TapaH	austerity	तपस्वरूप	तप
क्रियाः	KriyaaH	various acts	क्रियाएँ	क्रिया
प्रवर्तन्ते	Pravartante	begun	आरम्भ होती हैं	सुरू होतात
विधान - उक्ताः	Vidhaana - UktaaH	as enjoined in the scriptures	शास्त्रविधि से नियत	शास्त्रविधीने नियत
सततम्	Satatam	always	सदा	सतत
ब्रह्मवादिनाम्	Brahma - Vaadinaam	By the students of Brahman	वेद मन्त्रों का उच्चारण करनेवाले श्रेष्ठ पुरुषों की	वेदमंत्रांचे उच्चारण करणाऱ्या श्रेष्ठ पुरुषांच्या

अन्वय :- तस्मात् ब्रह्मवादिनाम् विधान - उक्ताः यज्ञ - दान - तपः - क्रियाः ॐ इति उदाहृत्य सततम् प्रवर्तन्ते ॥ १७ - २४ ॥

English translation:-

Therefore the acts of sacrifice, gift and austerity, as enjoined in the scriptures, are begun by students of Brahman always uttering Om.

हिन्दी अनुवाद :-

इसलिये वेद मन्त्रों का उच्चारण करनेवाले श्रेष्ठ पुरुषों की , शास्त्रविधि से नियत यज्ञ दान और तपस्वरूप क्रियाएँ , सदा 'ॐ' इस परमात्मा के नाम को उच्चारण कर के ही आरम्भ होती हैं ।

मराठी भाषान्तर :-

म्हणूनच ब्रह्मवादी लोकांची यज्ञ , दान , तपादि कर्मे यथाशास्त्र ॐकाराचा सतत उच्चार करून सुरू होतात .

विनोबांची गीताई :-

म्हणूनी आधीं ॐ - कार उच्चारूनि उपासक
यज्ञ - दान - तपें उक्त निरंतर अनुष्ठिती ॥ १७ - २४ ॥

तत् इति अनभिसंधाय फलम् यज्ञ तपः क्रियाः ।

दानक्रियाः च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥ १७ - २५॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
तत्	Tat	that	'तत्' नाम से कहे जानेवाले परमात्मा का	'तत्' या नावाने ओळखल्या जाणाऱ्या परमात्म्याचे
इति	Iti	thus	ही यह सब है इस भाव से	हे (सर्व काही आहे या भावनेने)
अनभिसंधाय	Anabhidhaaya	without aiming at	न चाहकर	अपेक्षा न धरता
फलम्	Phalam	fruit	फल को	फळाची
यज्ञ	Yadnya	sacrifice	यज्ञ	यज्ञ
तपः	TapaH	austerity	तपस्वरूप	तप
क्रियाः	KriyaaH	various acts of	क्रियाएँ	क्रिया
दानक्रियाः	Daana-KriyaaH	acts of gift	दानरूप क्रिया	दानक्रिया
च	Cha	and	तथा	तसेच
विविधाः	VividhaaH	various	नाना प्रकार की	नाना प्रकारच्या
क्रियन्ते	Kriyante	are performed	की जाती हैं	केल्या जातात
मोक्षकाङ्क्षिभिः	Moksha-KaankshibhiH	by seekers of liberation	कल्याण की इच्छावाले पुरुषों द्वारा	मोक्ष-कल्याणाची इच्छा करणाऱ्या पुरुषांकडून

अन्वय :- मोक्षकाङ्क्षिभिः तत् इति (उदाहृत्य) फलम् अनभिसंधाय विविधाः यज्ञ - तपः - क्रियाः दानक्रियाः च क्रियन्ते ॥ १७ - २५ ॥

English translation:-

By uttering "Tat", without aiming at the rewards, the various acts of sacrifice, austerity and gift are performed by the seekers of Moksha (liberation from the cycle of life and death).

हिन्दी अनुवाद :-

' तत् ' नाम से कहे जानेवाले परमात्मा का ही यह सब है। इस भाव से फल को न चाहकर नाना प्रकार की यज्ञ , तपस्वरूप तथा दानरूप क्रियाएँ कल्याण की इच्छावाले पुरुषों द्वारा की जाती हैं।

मराठी भाषान्तर :-

मोक्षप्राप्तीची इच्छा करणारे लोक ' तत् ' शब्दाचा उच्चार करून , फळाची अपेक्षा न करता ; यज्ञकर्मे , तपश्चर्या आणि दानक्रिया करतात .

विनोबांची गीताई :-

तत् - कार - स्मरणें सर्व तोडूनि फल - वासना
नाना यज्ञ तपें दानें करिती मोक्ष लक्षुनी ॥ १७ - २५ ॥

सद्भावे साधुभावे च सत् इति एतत् प्रयुज्यते ।

प्रशस्ते कर्मणि तथा सत् शब्दः पार्थ युज्यते ॥ १७ - २६॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
सद्भावे	Sad - bhaave	in the sense of reality / existence	सत्यभाव में	सत्यभावात
साधुभावे	Saadhu - bhaave	in the sense of goodness	श्रेष्ठभाव में	श्रेष्ठभावात
च	Cha	and	और	आणि
सत्	Sat	Sat	' सत् '	सत्
इति	Iti	thus	इस प्रकार	या प्रकारे
एतत्	Etat	this	यह परमात्मा का नाम	या (परमात्म्याच्या नामाचा)
प्रयुज्यते	Prayujjyate	is used	प्रयोग किया जाता है	प्रयोग केला जातो
प्रशस्ते	Prashaste	auspicious	उत्तम	उत्तम
कर्मणि	KarmaNi	in act	कर्म में भी	कर्मात
तथा	Tathaa	so also	तथा	तसेच
सत्	Sat	Sat	' सत् '	' सत् '
शब्दः	ShabdaH	word	शब्द का	शब्द
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे पार्थ !	हे अर्जुना !
युज्यते	Yujyate	is used	प्रयोग किया जाता है	प्रयोग केला जातो

अन्वय :- (ज्ञानिभिः) सत् इति एतत् सद्भावे च साधुभावे च प्रयुज्यते तथा हे पार्थ ! प्रशस्ते कर्मणि सत् शब्दः युज्यते ॥ १७ - २६ ॥

English translation:-

The word "Sat" is used in the sense of reality and of goodness; and so also O Arjuna, the word "Sat" is used in the sense of an auspicious act.

हिन्दी अनुवाद :-

' सत् ' इस प्रकार यह परमात्मा का नाम सत्यभाव में और श्रेष्ठभाव में प्रयोग किया जाता है तथा हे पार्थ ! उत्तम कर्म में भी ' सत् ' शब्दका प्रयोग किया जाता है ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! ज्ञानी लोक ' सत् ' शब्दाचा उपयोग सद्भाव आणि साधुभाव याअर्थी करतात . तसेच उत्तम कार्यासाठीही ' सत् ' शब्द योजला जातो .

विनोबांची गीताई :-

सत् - कार - स्मरणें लाभे सत्यता आणि साधुता
तशी सुंदरता कर्मीं सत् - कारें बोलिली असे ॥ १७ - २६ ॥

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सत् इति च उच्यते ।

कर्म च एव तद् अर्थीयम् सत् इति एव अभिधीयते ॥ १७ - २७॥

शब्द	शब्द - उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
यज्ञे	Yadnye	in sacrifice	यज्ञ में	यज्ञात
तपसि	Tapasi	in austerity	तप में	तपात
दाने	Daane	in gift	दान में	दानात
च	Cha	and	और	तसेच
स्थितिः	SthitiH	steadfastness	जो स्थिति है	स्थिती (श्रद्धा व आस्तिकभाव)
सत्	Sat	Sat	सत्	सत्
इति	Iti	thus	इस प्रकार	याप्रकारे
च	Cha	and	और	आणि
उच्यते	Uchyate	is called	कही जाती है	सांगितली जाते
कर्म	Karma	action	कर्म	कर्म
च	Cha	and	और	आणि
एव	Eva	also	निश्चयपूर्वक	निश्चितपणे
तद्	Tad	Tat / Tad (Brahman)	उस परमात्मा के लिये	त्या (परमात्म्याच्या साठी)
अर्थीयम्	Artheeyam	for the sake of	किया हुआ	च्यासाठी
सत्	Sat	Sat	सत्	सत्
इति	Iti	thus	ऐसे	असे
एव	Eva	even	वह भी	सुद्धा
अभिधीयते	Abhidheeyate	is called	कहा जाता है	म्हटले जाते

अन्वय :- यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सत् इति च उच्यते। तद् अर्थीयम् कर्म च एव सत् इति एव अभिधीयते ॥ १७ - २७॥

English translation:-

Steadfastness in sacrifice, austerity and gift is also called “Sat”, also action for “Tat” (Brahman) is even called “Sat”.

हिन्दी अनुवाद :-

तथा यज्ञ, तप और दान में जो स्थिति है वह भी ‘ सत् ‘ इस प्रकार कही जाती है और उस परमात्मा के लिये किया हुआ कर्म निश्चयपूर्वक ‘ सत् ‘ ऐसे कहा जाता है।

मराठी भाषान्तर :-

यज्ञ, तप आणि दान यांच्यात जी स्थिर भावना ठेवावी लागते, त्या निष्ठेलाही ‘ सत् ‘ असे म्हणतात आणि त्यासाठी केलेले कर्म, त्यालाही ‘ सत् ‘ म्हणजेच सत्कर्म असे म्हणतात .

विनोबांची गीताई :-

यज्ञ - दान - तपें किंवा कर्मे जीं त्यांस साधक
वागणें ह्यापरी त्यांत सत् - कार - फळ बोलिलें ॥ १७ - २७ ॥

अश्रद्धया हुतम् दत्तम् तपः तप्तम् कृतम् च यत् ।

असत् इति उच्यते पार्थ न च तत् प्रेत्य न इह ॥ १७ - २८॥

शब्द	शब्द उच्चार	English	हिन्दी	मराठी
अश्रद्धया	Ashraddhayaa	without faith	बिना श्रद्धा के	श्रद्धेविना
हुतम्	Hutam	is sacrificed	किया हुआ हवन	केले जाणारे हवन
दत्तम्	Dattam	given	दिया हुआ दान	दिलेले दान
तपः	TapaH	austerity	तपा हुआ	तप
तप्तम्	Taptam	is practised	तप	आचरलेले
कृतम्	Krutam	done	किया हुआ शुभ कर्म है	केलेले (शुभ कार्य)
च	Cha	and	और	आणि
यत्	Yat	that which	जो कुछ भी	जे काहीही
असत्	Asat	Asat	‘ असत् ‘	‘ असत् ‘
इति	Iti	thus	इस प्रकार	असे
उच्यते	Uchyate	is called	कहा जाता है	सांगितले जाते
पार्थ	Paartha	O Arjuna!	हे अर्जुन !	हे अर्जुना !
न	Na	not	न तो	(लाभदायक) नाही
च	Cha	and	और	आणि
तत्	Tat	that	वह	ते
प्रेत्य	Pretya	hereafter / after death	मरने के बाद ही	मेल्यावरही
न	Na	not	न	नाही
इह	Iha	here	तो इस लोक में	या पृथ्वीलोकीही

अन्वय :- हे पार्थ ! अश्रद्धया हुतम् दत्तम्, तपः तप्तम्, यत् च कृतम् ; तत् असत् इति उच्यते ; (तत्) न प्रेत्य , इह (अपि) च (फलप्रदम्) न (भवति) ॥ १७ - २८ ॥

English translation:-

Whatever is sacrificed, given or performed and whatever austerity is practised without faith, it is called "Asat", O Arjuna. Such action is meaningless and purposeless here (in present life) or hereafter (after death).

हिन्दी अनुवाद :-

हे अर्जुन ! बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान एवं तपा हुआ तप और जो कुछ भी किया हुआ अशुभ कर्म है वह समस्त 'असत्' इस प्रकार कहा जाता है ; इसलिये वह न तो इस लोक में लाभदायक है और न मरने के बाद ही ।

मराठी भाषान्तर :-

हे अर्जुना ! श्रद्धेशिवाय केलेले हवन, दिलेले दान, केलेले तप आणि जे काही केलेले कार्य असेल, ते सर्व 'असत्' म्हटले जाते . त्यामुळे ते न इहलोकात, न परलोकात फळदायी ठरते .

विनोबांची गीताई :-

यज्ञ दानें तपें कर्में अश्रद्धेनें अनुष्ठिलीं
बोलिलीं सर्व तीं मिथ्या दोन्ही लोकांत निष्फळ ॥ १७ - २८ ॥

ॐ तत् सत् इति श्रीमद् भगवद् गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायाम् योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुन संवादे श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥

हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् । हरिः ॐ तत् सत् ।

Om that is real. Thus, in the Upanishad of the glorious Bhagwad Geeta, the knowledge of Brahman, the Supreme, the science of Yoga and the dialogue between Shri Krishna and Arjuna this is the seventeenth discourse designated as "The Yoga of Threefold Division of Faith".

सतराव्या अध्यायाचा एका श्लोकात मथितार्थ

सत्त्व रजस्तम तीन गुणांसह श्रद्धा तप मख दान असे ।
अशनहि तैसें निजबीजापरि आवडि त्यावरि दृढ बैसे ॥
उत्तम मध्यम अधम जाण ही कर्मे त्यांतुनि सत्त्व धरी ।
मग ॐ तत् सत् म्हणुनि धनंजय ब्रह्मसमर्पण कर्म करी ॥ १७॥

गीता सुगीता कर्तव्या किम् अन्यैः शास्त्रविस्तरैः ।
या स्वयम् पद्मनाभस्य मुखपद्माद् विनिःसृता ॥

गीता सुगीता करण्याजोगी आहे म्हणजेच गीता उत्तम प्रकारे वाचून तिचा अर्थ आणि भाव अन्तःकरणात साठवणे हे कर्तव्य आहे. स्वतः पद्मनाभ भगवान् श्रीविष्णूंच्या मुखकमलातून गीता प्रगट झाली आहे. मग इतर शास्त्रांच्या फाफटपसाऱ्याची जरूरच काय ?

- श्री महर्षी व्यास

विनोबांची गीताई :-

गीताई माउली माझी तिचा मी बाळ नेणता ।
पडतां रडतां घेई उचलूनि कडेवरी ॥